महालक्ष्मी और सच्चे ज्ञान का वरदान

भारत की एक प्राचीन कथा पर आधारित

आज से लगभग सात सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में एक बुद्धिमान युवा ब्राह्मण, जिसका नाम माधव था, राजा की सभा का सदस्य बन गया। माधव वाक्पटु था — वह इस बात में दक्ष था कि उसे कब और क्या कहना चाहिए और वह शीघ्र ही राजा का अत्यन्त प्रिय बन गया।

माधव, स्वयं को मिल रहे सम्मान से बहुत खुश रहने लगा व और भी उन्नति करने लगा। जब भी वह बोलता तो वरिष्ठ सलाहकार शान्त हो जाते जिससे वे इस युवा सदस्य की बात सुन सकें। माधव, राजसी वातावरण में वैभवशाली जीवन का आनन्द ले रहा था : मख़मली बिस्तर, तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन और राजसी संगति, सब कुछ उसके लिए एक नया अनुभव था।

परन्तु माधव अपने इस सौभाग्य से सन्तुष्ट नहीं था। उसे हर चीज़ अधिक से अधिक चाहिए थी! माधव को सबसे अच्छे रेशम से बने परिधान और पगड़ियाँ चाहिए थीं। उसे हीरे, पन्ने व माणिक्यों से जड़ित सोने की अँगूठियाँ चाहिए थीं। वह अपने पास गुप्तचरों का एक दल रखना चाहता था जो उसे राजमहल के हर रहस्य व राजा के विरुद्ध चल रहे हरेक षड्यंत्र के बारे में पहले से सूचित कर सकें। माधव चाहता था कि वह राजा के लिए बेशक़ीमती व असाधारण उपहार खरीदे जिससे वह हमेशा राजा का प्रिय सभासद बना रहे।

माधव समझ गया था कि यदि उसे यह सब प्राप्त करना है तो उसे बहुत अधिक धनराशि की आवश्यकता होगी। इस कठिन चुनौती के बारे में उसने बहुत समय लेकर बड़ी गम्भीरता से विचार किया।

एक दिन प्रातः उसे एक उत्तम विचार आया। वह अपनी इस धनप्राप्ति की कामना के लिए देवी लक्ष्मी से प्रार्थना करेगा। माधव ने खुद से कहा कि वह इतनी सहृदयता से प्रार्थना करेगा कि प्रचुरता की देवी निश्चित तौर पर उसे वरदान देंगी और वह भी बहुतायत में।

उसी दिन माधव एक साहूकार के पास गया और उससे ऋण के रूप में हज़ारों मुद्राएँ ले आया। उसने श्रीलक्ष्मी की चन्दन की एक उत्कृष्ट मूर्ति खरीदी जो उसके कद से भी ऊँची थी। इस मूर्ति की उचित तरीक़े से पूजा करने के लिए उसने बहुमूल्य चन्दन का इत्र, श्वेत मोगरे की माला, एक कढ़ाईदार रेशमी वस्त्र, आरती के लिए एक स्वर्ण का दीपक, घंटी आदि वस्तुएँ खरीदीं। फिर वह शीघ्रता से अपने घर आया और श्रीलक्ष्मी के आगमन की तैयारी के लिए अपने कक्ष को स्वच्छ किया।

शाम को माधव अपनी पूजा और वहाँ विराजमान देवी के भव्य स्वरूप के सम्मुख बैठा था।

सर्वप्रथम उसने बड़े केन्द्रण और भाव के साथ श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्रम् का पाठ किया। उसने प्रार्थना की : “हे महादेवी, मुझ पर कृपा करें, मुझे आशीर्वाद दें और मनवांछित धन प्रदान करें।”

इसके बाद हर रोज़ माधव सुबह और शाम देवी महालक्ष्मी की मूर्ति का सुगन्धित इत्र से अभिषेक करता, उन्हें ताज़े फूलों की माला पहनाता, धूप व दीप से उनकी पूजा करता और एक ही बार में पावन स्तोत्र का पाठ — पहले एक बार, फिर दो बार और फिर तीन बार करता। और हर बार जब माधव ऐसा करता तो वह धन के लिए प्रार्थना करता।

इसी तरह चार वर्ष बीत गए। इस दौरान राजमहल में माधव का प्रभाव भी बढ़ता चला गया परन्तु उसे वांछित धन की प्राप्ति कभी नहीं हुई। जो भी धन उसे मिलता वह किसी-न-किसी कारण से कभी भी पर्याप्त नहीं होता। उसके हाथों से पैसा पानी से भी तेज गति से बहता; उसे हमेशा लगता कि उसे और अधिक चाहिए।

चार वर्ष और बीत गए, और अब माधव ने पाया कि वह अपने स्वप्नों में भी श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्रम् का पाठ कर रहा है। श्रीलक्ष्मी की छवि निरन्तर उसके मन की आँखों में बनी रहती, उसकी हर श्वास उनके नाम से महक रही होती। यद्यपि वह अब भी धन के लिए प्रार्थना करता पर राजा के इस सलाहकार के अन्तर में कहीं कुछ परिवर्तित हो रहा था।

जब माधव राजमहल के उद्यानों में घूमता तब गुलाब की खिलती कली के कोमल सौन्दर्य से मन्त्रमुग्ध हो जाता। ग्रीष्म ऋतु की सन्ध्यासमय गूंजते कोयल के स्वर, उसकी आँखों में आँसू ले आते। सूर्यास्त का वैभव उसे पूर्ण शान्ति के भाव में समाहित कर लेता।

वर्ष पर वर्ष बीतते गए, और माधव देवी महालक्ष्मी की नित्य-प्रतिदिन पूजा करता रहा। पूजा के पवित्र शब्द उसकी जिह्वा पर अमृत के समान महसूस होते। उसके हृदय में देवी इस तरह समा गई थीं कि अन्य किसी वस्तु के लिए उसमें स्थान ही नहीं बचा था। राजमहल में खेले जाने वाले सत्ता के खेल उसे संकीर्ण व अर्थहीन प्रतीत होते। माधव को राजा व राज्य के प्रति असीम निष्ठा का अनुभव हो रहा था परन्तु एक दिन उसे एहसास हुआ कि उसके हृदय को किसी और जीवन की लालसा थी — आराधना व सेवा से परिपूर्ण जीवन की। उसने राजा से आज्ञा ली और हम्पी के पर्वतों की ओर चल दिया, जहाँ उसने संन्यास-दीक्षा ग्रहण की और उसका नाम माधवानन्द स्वामी हो गया।

अगले ही दिन जब नए संन्यासी ने ध्यान के बाद अपनी आँखें खोली तो अपने आपको अत्यन्त पावन उपस्थिति में पाया। वहाँ उसके सम्मुख श्रीमहालक्ष्मी अपने जगमगाते स्वरूप में, उदीयमान सूर्य के समान गुलाबी स्वर्णिम रंग की साड़ी धारण किए हुए एक पूर्ण कमल पर खड़ी थीं। वे देवी, जिनकी आराधना वह कई वर्षों से कर रहा था।

“हे महान देवी,” माधवानन्द ने कहा, “आपके इस पवित्र स्वरूप का दर्शन पाना कितना अविश्वसनीय आशीर्वाद है!”

“तुम आश्चर्यचकित हो?” देवी ने उससे पूछा, “क्या तुम वर्षों से प्रतिदिन मेरे नाम का जप नहीं कर रहे थे?”

माधवानन्द ने इस अलौकिक छवि के सम्मुख नतमस्तक होते हुए दण्डवत प्रणाम किया। श्रद्धा व सम्मान से उसका पूरा शरीर काँप रहा था।

देवी महालक्ष्मी ने कहा, “प्रिय भक्त माधवानन्द, तुमने अपनी आराधना व भक्ति से मुझे प्रसन्न किया है। मैं तुम्हें वरदान देने के लिए आई हूँ।”

माधवानन्द ने एक बार फिर अपना सिर उठाकर देवी के जगमगाते मुखमण्डल की ओर देखा। “हे देवी, मैं तो आपके दर्शनमात्र से ही कृतार्थ और धन्य हो गया हूँ। मुझे किसी और वरदान की आवश्यकता नहीं है। मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि कृपया मुझे मेरी अज्ञानता के लिए क्षमा कर दें। कई वर्षों तक मैं आपसे धन के लिए प्रार्थना कर रहा था..... मैं महामूर्ख था। यह ऐसा ही था कि मानो मैं चन्द्रमा से केवल उसकी एक किरण ही माँग रहा था जबकि मैं तो उसके देदीप्यमान प्रकाश में पूर्णतः निमग्न हो सकता था।”

श्री लक्ष्मी मुस्कराईं। “कोई बात नहीं मैं फिर भी तुम्हें एक वरदान देना चाहती हूँ। कहो, तुम्हें क्या चाहिए?”

माधवानन्द देवी के प्रश्न पर मौन होकर विचार करने लगा। वह किस चीज़ की कामना करे? वह तो अब संन्यासी था। उसे अब धन की इच्छा नहीं रह गई थी — और न ही उस सत्ता और अधिकार की इच्छा रह गई थी जिसे वह एक समय पर धन द्वारा पाना चाहता था। उसे महसूस हुआ कि देवी महालक्ष्मी ने उसे पहले से ही प्रचुरतापूर्वक अपने आशीर्वाद प्रदान किए हैं। उन्होंने प्रकृति के सौन्दर्य को उसके सम्मुख प्रकट किया है। उसे जीवन की सरल-सी चीज़ों में निहित सुन्दरता को पहचानना सिखाया है जैसे शीतल जल का स्वाद, श्वास का वरदान, मौन का उपहार। फिर अचानक उसे कुछ सूझा. . .

“हे प्रिय देवी, मैं आपसे एक वरदान माँगना चाहता हूँ। मैं सत्य का ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ। यह सबसे बड़ा धन है। अब जब मैंने आपके सत्यस्वरूप के दर्शन पा लिए हैं, मैं यह जानता हूँ कि समस्त ज्ञान का वास आपमें ही है। यदि आप मुझे इस योग्य समझें तो कृपया यह वरदान प्रदान करें। मैं अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता के उत्थान के लिए समर्पित कर दूँगा।”

देवी महालक्ष्मी धीरे-से मुस्कराईं और उन्होंने अपना बायाँ हाथ स्वामी माधवानन्द के सिर पर रखा। “मैं तुम्हें तुम्हारा मनवांछित वरदान प्रदान करती हूँ। आज से तुम विद्यारण्य स्वामी के नाम से जाने जाओगे।”

इस नाम का अर्थ है “ज्ञान का, विद्या का वन,” जोकि बाद में, विद्यारण्य स्वामी के लिए एकदम उपयुक्त सिद्ध हुआ। श्रीमहालक्ष्मी से प्राप्त उपहार को उन्होंने पोषित किया और सत्य के ज्ञान को उन असंख्य

लोगों के साथ बाँटा जो उनके पास ज्ञानप्राप्ति के लिए आए। सदियों से यह ज्ञान उन अनगिनत लोगों को भी प्राप्त होता आ रहा है जो विद्यारण्य स्वामी द्वारा रचित ग्रन्थों को पढ़ रहे हैं।

विद्यारण्य स्वामी, एक परमपूज्य विद्वान थे, उन्होंने अद्वैत वेदान्त दर्शन पर एक ग्रन्थ 'पंचदशी' की रचना की। साथ ही, उन्होंने आदि शंकराचार्य की जीवनी भी लिखी जो आज भी बहुत सम्मानित ग्रन्थ है।

रश्मि स्मिथ द्वारा पुनः कथित
मेलानी हॉल द्वारा चित्रित
डिज़ाइन रूपरेखा : जोडी वोयवोडिन

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।